eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 1, Issue 10, October 2022

भारतीय चुनाव प्रणाली और उसमें सुधार की आवश्यकता

[1]डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल
1सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0, भारत

Abstract

भारतीय लोकतंत्र विश्व के सबसे बड़े लोकतंत्रों में से एक है, जिसकी चुनाव प्रणाली स्वतंत्रता के बाद से लगातार विकसित हो रही है। 1947 से 2021 तक भारतीय चुनाव प्रणाली में अनेक सुधार हुए हैं, किंतु आज भी यह कई चुनौतियों का सामना कर रही है। इस शोध पत्र में भारतीय चुनाव प्रणाली की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, उसकी वर्तमान स्थिति तथा उसमें सुधार की आवश्यकता का विस्तृत विश्लेषण किया गया है। यह अध्ययन चुनाव प्रक्रिया में पारदर्शिता, निष्पक्षता, तकनीकी उपयोग, धनबल एवं बाहुबल के प्रभाव, ईवीएम की विश्वसनीयता, मतदाता सूची में अनियमितताओं, चुनावी भ्रष्टाचार एवं अन्य मुद्दों पर केंद्रित है। अंततः, यह शोध पत्र संभावित सुधारों की ओर संकेत करता है जो भारतीय चुनाव प्रणाली को अधिक सक्षम और लोकतांत्रिक बना सकते हैं।

कीवर्ड– भारतीय चुनाव प्रणाली, निर्वाचन आयोग, सुधार, पारदर्शिता, ईवीएम, धनबल, बाहुबल, लोकतंत्र, मतदाता सूची, चुनावी भ्रष्टाचार।

Introduction

भारतीय लोकतंत्र की जड़ें स्वतंत्रता संग्राम के दौरान विकसित हुईं और 1947 के बाद देश में एक सुव्यवस्थित चुनाव प्रणाली स्थापित की गई। चुनाव लोकतंत्र का मूल स्तंभ है, जो जनता को सरकार चुनने का अधिकार देता है। भारतीय चुनाव प्रणाली समय–समय पर विभिन्न सुधारों के दौर से गुजरी है, लेकिन अभी भी इसमें कई खामियाँ हैं जिन्हें दूर करने की आवश्यकता है। इस शोध पत्र का उद्देश्य भारतीय चुनाव प्रणाली का विस्तृत अध्ययन कर उसकी कमियों को उजागर करना और प्रभावी सुधारों का सुझाव देना है। भारतीय चुनाव प्रणाली एक बहुदलीय प्रणाली पर आधारित है, जिसमें राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दलों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। संविधान के अनुच्छेद 324 से 329 तक चुनावों की प्रक्रियाएँ निर्धारित की गई हैं। इस प्रणाली में निर्वाचन आयोग की स्वतंत्र भूमिका एक महत्वपूर्ण तत्व है।

भारत में पहला आम चुनाव 1951–52 में हुआ था, जिसे स्वतंत्र एवं निष्पक्ष बनाने के लिए भारतीय चुनाव आयोग (Election Commission of India) की स्थापना की गई। उस समय मतदाता सूची तैयार करना और बड़े पैमाने पर चुनाव कराना एक बड़ी चुनौती थी। इन प्रारंभिक चुनावों में जनता की भागीदारी अत्यधिक थी, और भारत ने विश्व को यह दिखा दिया कि एक नवगठित लोकतंत्र भी सुचारु रूप से चुनाव प्रक्रिया संपन्न कर सकता है। इस समय की चुनाव प्रणाली मुख्य रूप से कागजी मतपत्रों पर आधारित थी और हाथ से गिनती की जाती थी।

भारत का निर्वाचन आयोग 25 जनवरी 1950 को स्थापित किया गया था, जिसे संविधान के अनुच्छेद 324 के तहत स्वतंत्र निकाय के रूप में मान्यता दी गई। समय के साथ, निर्वाचन आयोग को सशक्त करने के लिए कई सुधार किए गए। 1991 में मुख्य निर्वाचन आयुक्त को अधिक शक्तियाँ प्रदान की गईं और 1993 में इसे बहु–सदस्यीय निकाय में बदल दिया गया।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 1, Issue 10, October 2022

समय–समय पर चुनाव सुधारों को लागू किया गया, जिनमें 1989 में मतदाता पहचान पत्र की अनिवार्यता, 2003 में चुनावी वित्त पोषण में सुधार और 2010 के बाद ईवीएम के उपयोग को अनिवार्य बनाया जाना शामिल है। 2017 में चुनाव सुधार के तहत वन नेशन, वन इलेक्शन पर भी चर्चा हुई।

भारतीय निर्वाचन आयोग चुनाव प्रक्रिया की निगरानी करता है और स्वतंत्र एवं निष्पक्ष चुनाव सुनिश्चित करने के लिए उत्तरदायी होता है। यह एक संवैधानिक निकाय है जो केंद्र और राज्य दोनों स्तरों पर चुनाव संचालित करता है।

भारत में प्रथम–पंक्ति बहुमत प्रणाली (First Past, The Post System) अपनाई गई है, जिसमें अधिकतम मत प्राप्त करने वाला प्रत्याशी विजेता घोषित होता है। हालाँकि, इसमें कई खामियाँ हैं, जैसे कि अल्पसंख्यक मतों का प्रतिनिधित्व सुनिश्चित न होना।

ईवीएम के उपयोग से मतदान प्रक्रिया तेज और पारदर्शी बनी है, किंतु इसकी विश्वसनीयता पर कई बार सवाल उठे हैं। वीवीपैट प्रणाली को इस संदर्भ में पारदर्शिता बढ़ाने के लिए जोड़ा गया।

भारतीय चुनाव प्रणाली कई महत्वपूर्ण चुनौतियों का सामना कर रही है, जो इसकी पारदर्शिता, निष्पक्षता और प्रभावशीलता को प्रभावित करती हैं। इनमें धनबल और बाहुबल का प्रभाव, चुनावी हिंसा, मतदाता सूची में अनियमितताएँ, मीडिया एवं सोशल मीडिया की भूमिका तथा दलबदल और राजनीतिक अस्थिरता प्रमुख हैं।

चुनावों में धनबल और बाहुबल का उपयोग लगातार बढ़ रहा है। उम्मीदवार चुनाव प्रचार, मतदाताओं को प्रभावित करने और पार्टी को मजबूत करने के लिए बड़े पैमाने पर धन का उपयोग करते हैं। कई बार यह धन अवैध स्रोतों से आता है, जिससे भ्रष्टाचार को बढ़ावा मिलता है। बाहुबल का प्रभाव भी चुनावों में देखा जाता है, जहाँ कुछ क्षेत्रों में मतदाताओं को धमकी दी जाती है या हिंसा का सहारा लिया जाता है। भारत में कई राज्यों में चुनावी हिंसा एक गंभीर समस्या है। विभिन्न राजनीतिक दल अपने विरोधियों को कमजोर करने के लिए हिंसा, तोड़फोड़ और अन्य गैरकानूनी गतिविधियों का सहारा लेते हैं। इसके अलावा, चुनावी प्रक्रिया के दौरान प्रशासन की निष्क्रियता या राजनीतिक दबाव के कारण कानून व्यवस्था प्रभावित होती है।

मतदाता सूची में अनियमितताएँ भी एक बड़ी चुनौती हैं। कई बार पात्र मतदाताओं के नाम सूची से गायब हो जाते हैं, जबकि अपात्र व्यक्तियों या फर्जी मतदाताओं के नाम सूची में जुड़े रहते हैं। यह समस्या कई राज्यों में देखने को मिलती है, जिससे निष्पक्ष चुनाव कराना कठिन हो जाता है।

मीडिया और सोशल मीडिया चुनाव प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, लेकिन कभी–कभी यह पक्षपातपूर्ण या भ्रामक जानकारी फैलाने का माध्यम बन जाते हैं। चुनावों के दौरान फेक न्यूज़, दुष्प्रचार और प्रोपेगेंडा का व्यापक उपयोग किया जाता है, जिससे मतदाताओं को भ्रमित किया जा सकता है। दलबदल (पार्टी बदलने की प्रवृत्ति) भारतीय राजनीति की एक बड़ी समस्या है। कई बार नेता चुनाव जीतने के बाद अपने लाभ के लिए पार्टी बदल लेते हैं, जिससे लोकतांत्रिक मूल्यों का उल्लंघन होता है। यह राजनीतिक अस्थिरता को जन्म देता है और जनता के विश्वास को कमजोर करता है। भारतीय चुनाव प्रणाली में कई सुधारों की आवश्यकता है ताकि इसे अधिक पारदर्शी, निष्पक्ष और लोकतांत्रिक बनाया जा सके। निम्नलिखित पहलुओं में सुधार आवश्यक हैं– चुनावी प्रक्रिया की पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए निम्नलिखित सुधार आवश्यक हैं–

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 1, Issue 10, October 2022

मतदान और मतगणना की संपूर्ण प्रक्रिया की निगरानी के लिए स्वतंत्र और निष्पक्ष निकायों की नियुक्ति।

चुनावी प्रक्रिया को ऑनलाइन और डिजिटल माध्यम से अधिक पारदर्शी बनाने के लिए ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग।

निष्पक्ष चुनावी कवरेज के लिए मीडिया और सोशल मीडिया पर सख्त नियम बनाए जाएं।

चुनावों में धनबल के प्रभाव को कम करने के लिए निम्नलिखित सुधार आवश्यक हैं–

राजनीतिक दलों के वित्तीय स्रोतों की पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए चुनाव आयोग द्वारा नियमित ऑडिट।

कॉर्पोरेट और बाहरी फंडिंग पर नियंत्रण, ताकि चुनाव में आर्थिक असमानता न हो।

राज्य द्वारा चुनावी वित्त पोषण की व्यवस्था ताकि उम्मीदवारों को बाहरी धन पर निर्भर न रहना पड़े।

ईवीएम की विश्वसनीयता बढ़ाने के लिए निम्नलिखित सुधार आवश्यक हैं–

वीवीपैट (VVPAT) को अनिवार्य रूप से सभी मतदान केंद्रों पर लागू किया जाए।

ईवीएम की प्रामाणिकता सुनिश्चित करने के लिए तीसरे पक्ष के तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा नियमित जांच।

बायोमेट्रिक सत्यापन की प्रणाली को ईवीएम के साथ जोड़ा जाए, ताकि फर्जी मतदान को रोका जा सके।

मतदाता सूची में अनियमितताओं को रोकने के लिए निम्नलिखित सुधार आवश्यक हैं–

आधार कार्ड या अन्य सरकारी प्रमाणपत्रों से मतदाता सूची को स्वचालित रूप से अपडेट किया जाए।

नाम जोड़ने और हटाने की प्रक्रिया को आसान और डिजिटल किया जाए।

प्रत्येक नागरिक के लिए एक अद्वितीय मतदाता पहचान पत्र जारी किया जाए, जिससे दोहरी मतदान की संभावना समाप्त हो।

राजनीतिक भ्रष्टाचार को समाप्त करने और नैतिकता को बढ़ावा देने के लिए निम्नलिखित सुधार आवश्यक हैं–

चुनावी अपराधों के लिए त्वरित न्यायिक कार्रवाई और कठोर दंड।

दलबदल विरोधी कानूनों को सख्त किया जाए ताकि निर्वाचित प्रतिनिधि अपने कार्यकाल के दौरान पार्टी न बदल सकें।

उम्मीदवारों की पारदर्शिता सुनिश्चित करने के लिए उनकी शैक्षणिक योग्यता, आपराधिक पृष्ठभूमि और संपत्ति का खुलासा अनिवार्य किया जाए।

अंतरराष्ट्रीय चुनाव प्रणालियों से सीख– भारतीय चुनाव प्रणाली को अधिक कुशल और निष्पक्ष बनाने के लिए विभिन्न देशों की चुनाव प्रणालियों से सीख लेना आवश्यक है। विभिन्न विकसित लोकतंत्रों ने अपने चुनावी तंत्र को पारदर्शी और प्रभावी बनाने के लिए कई नवाचार किए हैं, जिनका अध्ययन भारत के लिए उपयोगी हो सकता है।

अमेरिका की चुनाव प्रणाली, अमेरिका में चुनाव प्रणाली संघीय और राज्य स्तर पर कार्य करती है। इसकी कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 1, Issue 10, October 2022

मतदान प्रणाली, अमेरिका में इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग, मेल इन बैलट और व्यक्तिगत मतदान की सुविधा दी जाती है।

प्राथमिक चुनाव, उम्मीदवारों के चयन की प्रक्रिया में प्राथमिक चुनाव (प्राइमरी) का आयोजन किया जाता है, जिससे पार्टियों के भीतर लोकतंत्र सुनिश्चित किया जाता है।

चुनाव वित्त पोषण, सख्त चुनावी वित्त पोषण नियम लागू किए गए हैं, जिससे अनैतिक धन के प्रभाव को कम किया गया है।

सुप्रीम कोर्ट की निगरानी, चुनावी अनियमितताओं पर अमेरिकी सुप्रीम कोर्ट और अन्य न्यायिक संस्थाएँ सख्त कार्रवाई करती हैं।

ब्रिटेन की चुनाव प्रणाली– ब्रिटेन की चुनाव प्रणाली पारंपरिक और आधुनिक तरीकों का समावेश करती है। इसकी प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं–

पहले पास्ट द पोस्ट प्रणाली (First,Past,The,Post System) इसमें जिस उम्मीदवार को सबसे अधिक मत मिलते हैं, वही विजयी घोषित होता है।

सख्त चुनाव आचार संहिता, ब्रिटेन में राजनीतिक दलों को सख्त आचार संहिता का पालन करना होता है, जिससे चुनावी अनियमितताओं को नियंत्रित किया जाता है।

डिजिटल और पेपर बैलेट का संयोजन, ब्रिटेन में इलेक्ट्रॉनिक और पारंपरिक पेपर बैलेट प्रणाली का संतुलन बनाया गया है।

अन्य लोकतांत्रिक देशों की चुनाव प्रणाली–

जर्मनी, – मिश्रित सदस्य आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली (MiÛed Member Proportional Representation) लागू है, जिससे मतदाताओं को अधिक प्रतिनिधित्व मिलता है। राजनीतिक दलों को सरकारी अनुदान दिया जाता है, जिससे बाहरी धन के प्रभाव को कम किया जाता है।

ऑस्ट्रेलिया – वरीयता मतदान प्रणाली (Preferential Voting System) लागू है, जिससे चुनाव अधिक लोकतांत्रिक बनते हैं। चुनावी भागीदारी बढ़ाने के लिए मतदान अनिवार्य किया गया है।

भारत अंतरराष्ट्रीय चुनाव प्रणालियों से निम्नलिखित सुधार अपना सकता है–

चुनावी वित्त पोषण में पारदर्शिता, अमेरिका और जर्मनी की तरह, भारतीय राजनीतिक दलों के लिए सख्त वित्तीय नियम बनाए जाएँ और चुनावी खर्च की निगरानी हो।

मतदाता सूची का उन्नयन, ब्रिटेन और ऑस्ट्रेलिया की तरह भारतीय मतदाता सूची को अधिक अद्यतन और त्रुटिहीन बनाने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग किया जाए।

प्राथमिक चुनाव प्रणाली, अमेरिका की तरह, राजनीतिक दलों के भीतर उम्मीदवारों के चयन के लिए प्राथमिक चुनाव प्रणाली अपनाई जाए।

मतदान प्रणाली में विविधता, अमेरिका की तरह, भारत में भी पोस्टल बैलेट और डिजिटल वोटिंग के विकल्पों पर विचार किया जाए।

मतदान अनिवार्य किया जाए, ऑस्ट्रेलिया की तरह, मतदान को अनिवार्य बनाने पर विचार किया जाए ताकि अधिकतम नागरिक चुनावी प्रक्रिया में भाग लें।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 1, Issue 10, October 2022

इन सुधारों को लागू करने से भारतीय चुनाव प्रणाली अधिक पारदर्शी, निष्पक्ष और प्रभावी बन सकती है।

संभावित सुधार और सुझाव– भारतीय चुनाव प्रणाली को अधिक पारदर्शी, निष्पक्ष और प्रभावी बनाने के लिए निम्नलिखित सुधारों को लागू किया जा सकता है–

ऑनलाइन मतदान प्रणाली– सुरक्षित एवं विश्वसनीय डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से मतदान प्रक्रिया को ऑनलाइन किया जा सकता है, जिससे प्रवासी भारतीयों एवं व्यस्त नागरिकों को सुविधा मिल सके।

ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग– मतदान प्रणाली में ब्लॉकचेन तकनीक के उपयोग से पारदर्शिता और सुरक्षा सुनिश्चित की जा सकती है।

बायोमेट्रिक सत्यापन– फर्जी मतदान रोकने के लिए बायोमेट्रिक आधारित वोटिंग प्रणाली अपनाई जा सकती है।

स्वतंत्र चुनाव सुधार आयोग– एक स्वतंत्र चुनाव सुधार आयोग की स्थापना की जाए, जो चुनावी सुधारों के लिए नियमित अध्ययन करे।

तेजी से न्यायिक प्रक्रिया– चुनावी अनियमितताओं से संबंधित मामलों की सुनवाई के लिए विशेष अदालतों का गठन किया जाए, ताकि त्वरित न्याय संभव हो।

चुनावी फंडिंग में पारदर्शिता– राजनीतिक दलों की फंडिंग को पारदर्शी बनाने के लिए डिजिटल भुगतान और सार्वजनिक वित्त पोषण पर जोर दिया जाए।

उम्मीदवारों के चयन में सुधार– आंतरिक लोकतंत्र को बढ़ावा देने के लिए राजनीतिक दलों में उम्मीदवार चयन की पारदर्शी प्रक्रिया अपनाई जाए।

दलबदल विरोधी कानून को मजबूत बनाना– दलबदल को रोकने के लिए कानून को सख्त बनाया जाए और दोषी नेताओं पर चुनाव लड़ने से प्रतिबंध लगाया जाए।

मतदाता जागरूकता अभियान– वोटिंग प्रतिशत बढ़ाने के लिए व्यापक जन–जागरूकता अभियान चलाए जाएं।

मतदान अनिवार्य किया जाए– ऑस्ट्रेलिया की तरह भारत में भी मतदान को अनिवार्य बनाने पर विचार किया जाए।

मतदाता सूची की शुद्धता– त्रुटि रहित मतदाता सूची तैयार करने के लिए डिजिटल सत्यापन प्रक्रिया अपनाई जाए।

फेक न्यूज़ पर नियंत्रण– सोशल मीडिया और समाचार माध्यमों में गलत सूचना के प्रसार को रोकने के लिए सख्त नियम लागू किए जाएं।

चुनाव पूर्व सर्वेक्षण और एक्ज़िट पोल का विनियमन– चुनावी माहौल को निष्पक्ष बनाए रखने के लिए चुनाव आयोग द्वारा सर्वेक्षण और पोल पर उचित नियंत्रण रखा जाए।

मीडिया की जवाबदेही सुनिश्चित की जाए– राजनीतिक दलों द्वारा मीडिया के दुरुपयोग को रोकने के लिए कठोर नियम लागू किए जाएं।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 1, Issue 10, October 2022

उपरोक्त सुधारों को लागू करने से भारतीय चुनाव प्रणाली अधिक लोकतांत्रिक, पारदर्शी और प्रभावी बन सकती है।

अंततोगत्वा भारतीय चुनाव प्रणाली ने 1947 से 2021 तक एक लंबी यात्रा तय की है, जिसमें कई सुधार हुए हैं, लेकिन आज भी यह विभिन्न चुनौतियों से घिरी हुई है। चुनावी प्रक्रिया में धनबल, बाहुबल, मतदाता सूची की खामियाँ, चुनावी भ्रष्टाचार और मीडिया की भूमिका जैसे प्रमुख मुद्दे लोकतांत्रिक मूल्यों को प्रभावित कर रहे हैं। हालांकि, समय–समय पर हुए चुनाव सुधारों ने इन समस्याओं को कुछ हद तक कम किया है, फिर भी एक पूर्णतः निष्पक्ष, पारदर्शी और विश्वसनीय प्रणाली स्थापित करने के लिए और अधिक सुधारों की आवश्यकता है। चुनाव सुधारों की दिशा में डिजिटल तकनीकों का प्रयोग एक सकारात्मक कदम हो सकता है, जिससे चुनाव प्रक्रिया को अधिक सुरक्षित और पारदर्शी बनाया जा सकता है। ब्लॉकचेन आधारित वोटिंग, बायोमेट्रिक सत्यापन और ऑनलाइन मतदान जैसी तकनीकों को लागू करके मतदान प्रक्रिया को अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। इसके अलावा, चुनावी वित्त पोषण में पारदर्शिता लाने के लिए कठोर कानूनों की आवश्यकता है, जिससे काले धन के प्रवाह को रोका जा सके।

राजनीतिक दलों की जवाबदेही बढ़ाने के लिए उनके आंतरिक लोकतंत्र को मजबूत करने और उम्मीदवार चयन की प्रक्रिया को पारदर्शी बनाने की जरूरत है। साथ ही, दलबदल विरोधी कानून को सख्त बनाने से राजनीतिक अस्थिरता को कम किया जा सकता है। न्यायपालिका और चुनाव आयोग को और अधिक स्वतंत्र तथा शक्तिशाली बनाकर चुनाव संबंधी विवादों का शीघ्र समाधान सुनिश्चित किया जा सकता है।

इसके अतिरिक्त, अंतरराष्ट्रीय चुनाव प्रणालियों से सीख लेकर भारत में उपयुक्त चुनावी सुधार किए जा सकते हैं। अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी और ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों की चुनाव प्रणालियों में पारदर्शिता, निष्पक्षता और तकनीकी उन्नति के जो पहलू सफल रहे हैं, उन्हें भारतीय परिप्रेक्ष्य में अपनाया जा सकता है।

नागरिक जागरूकता और भागीदारी लोकतंत्र को मजबूत करने का महत्वपूर्ण आधार है। सरकार, चुनाव आयोग और नागरिक समाज को मिलकर व्यापक जन–जागरूकता अभियान चलाने चाहिए, जिससे मतदाताओं को उनकी भूमिका और अधिकारों के प्रति सचेत किया जा सके।

अंततः, भारतीय चुनाव प्रणाली में सुधार एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है, जिसमें सभी हितधारकों –सरकार, निर्वाचन आयोग, राजनीतिक दल, मीडिया और आम नागरिकों की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। जब तक सभी स्तरों पर पारदर्शिता, निष्पक्षता और जवाबदेही सुनिश्चित नहीं होती, तब तक लोकतांत्रिक प्रक्रिया को पूरी तरह से निष्पक्ष और प्रभावी बनाना संभव नहीं होगा।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 1, Issue 10, October 2022

सन्दर्भ सूची–

1. सिंह, रणजीत (2015). भारतीय चुनाव प्रणाली इतिहास और सुधार. नई दिल्ली प्रकाशन संस्थान. ISBN: 978–93–5004–297–8 ।
2. मिश्रा, अरविंद (2018). लोकतंत्र और चुनाव सुधार. वाराणसी ज्ञानदीप प्रकाशन. ISBN: 978–81–8328–477–3 ।
3. मेहता, योगेश (2020). भारतीय राजनीति और निर्वाचन प्रक्रिया. जयपुर राष्ट्रीय पुस्तक न्यास- ISBN: 978–81–237–5456–2 ।
4. चौधरी, संजय (2017). भारत में चुनाव सुधार की दिशा में प्रयास. मुंबई लोकभारती प्रकाशन. ISBN: 978–93–81406–75–9 ।
5. गुप्ता, प्रशांत (2016). ईवीएम और लोकतंत्र संभावनाएँ और चुनौतियाँ. पटना साहित्य सदन. ISBN: 978–93–85647–20–5 ।
6. शर्मा, अजय (2019). भारतीय निर्वाचन आयोग और चुनाव प्रणाली. दिल्ली प्रभात प्रकाशन- ISBN: 978–81–7182–936–9 ।
7. वर्मा, मनोज (2021). चुनाव और मीडिया की भूमिका. कोलकाता साहित्य संगम. ISBN: 978–81–950531–3–8 ।
8. शुक्ला, दीपक (2014). भारत में चुनावी भ्रष्टाचार और पारदर्शिता. लखनऊ विश्वविद्यालय प्रकाशन. ISBN: 978–93–84735–23–4 ।
9. पांडेय, सुरेश (2013). भारतीय चुनाव आयोग अधिकार और चुनौतियाँ. भोपाल ज्ञानपीठ प्रकाशन. ISBN: 978–81–291–2711–7 ।
10. तिवारी, राजेश (2012). भारत में चुनाव प्रक्रिया और सुधार की दिशा. नागपुर सहयाद्री प्रकाशन. ISBN: 978–81–925400–4–6 ।